आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी आलोचना के शिखर पुरुष हैं। उनका निबंध **'कविता क्या है?'** न केवल हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, बल्कि यह काव्य-शास्त्रीय चिंतन की एक नई दिशा भी निर्धारित करता है। यह निबंध पहली बार 1909 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था और बाद में 'चिंतामणि' के पहले भाग में संकलित हुआ।

शुक्ल जी ने इस निबंध में कविता की जो परिभाषा दी है और उसके जो उद्देश्य बताए हैं, वे आज भी प्रासंगिक हैं। आइए, आपके द्वारा पूछे गए तीन मुख्य बिंदुओं—**कविता का स्वरूप, भाव-साधना और लोक-मंगल**—के आधार पर इसका विस्तृत विश्लेषण करते हैं।

---

1. कविता का स्वरूप: हृदय की मुक्तावस्था

शुक्ल जी कविता को केवल शब्दों का विन्यास या तुकबंदी नहीं मानते, बल्कि वे इसे मनुष्य की आत्मा की अभिव्यक्ति मानते हैं। उनके अनुसार:

"जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।"

स्वरूप की मुख्य विशेषताएँ:

- **सृष्टि के साथ सामंजस्य:** शुक्ल जी का मानना है कि कविता का मुख्य कार्य मनुष्य के हृदय को शेष सृष्टि (प्रकृति, जीव-जंतु, अन्य मानव) के साथ जोड़ना है। जब हम किसी फूल को देखकर खुश होते हैं या किसी दुखी प्राणी को देखकर करुणा से भर जाते हैं, तो हमारा हृदय विस्तृत होता है। कविता इसी विस्तार का माध्यम है।
- **मनुष्यता की रक्षा:** उनके अनुसार, सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य का हृदय संकुचित होता जा रहा है। वह केवल अपने लाभ और स्वार्थ की सोचता है। कविता उस 'स्वार्थ' के घेरे को तोड़कर हमें 'मनुष्य' बनाए रखती है।
- **प्रकृति का रागात्मक चित्रण:** कविता केवल मनुष्य के बारे में नहीं है, बल्कि वह जड़ और चेतन पूरी प्रकृति के साथ हमारे राग (प्रेम) का संबंध जोड़ती है।

---

2. भाव-साधना: अहंकार का विसर्जन

शुक्ल जी ने कविता को एक 'साधना' माना है। जैसे योगी अपनी आत्मा को परमात्मा में लीन करने के लिए साधना करता है, वैसे ही एक सहृदय व्यक्ति कविता के माध्यम से अपने भावों की साधना करता है।

भाव-साधना के आयाम:

- **साधारणीकरण (Universalization):** भाव-साधना का अर्थ है कि पाठक या श्रोता अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख को भूलकर उस भाव में लीन हो जाए जो कविता में वर्णित है। उदाहरण के लिए, यदि कविता में किसी बिछोह का वर्णन है, तो पाठक को अपना व्यक्तिगत वियोग याद नहीं आना चाहिए, बल्कि उसे 'वियोग' की उस सार्वभौमिक पीड़ा का अनुभव होना चाहिए।
- **अहंकार का लय:** भाव-साधना का सबसे बड़ा फल यह है कि वह मनुष्य के 'अहं' को खत्म कर देती है। कुछ क्षणों के लिए मनुष्य यह भूल जाता है कि वह 'मैं' है। वह उस रस में डूब जाता है जहाँ 'स्व' और 'पर' (दूसरा) का भेद मिट जाता है।
- **शुद्ध अनुभूति:** शुक्ल जी 'बुद्धि' के बजाय 'हृदय' पर अधिक बल देते हैं। वे कहते हैं कि कविता का काम ज्ञान देना नहीं, बल्कि अनुभूति कराना है। जो बात सीधे हृदय को स्पर्श करे, वही सच्ची कविता है।

---

3. लोक-मंगल की अवधारणा: काव्य का सामाजिक पक्ष

आचार्य शुक्ल 'कला, कला के लिए' (Art for Art's sake) के सिद्धांत को नहीं मानते थे। वे एक लोकवादी आलोचक थे। उनके लिए कविता का चरम लक्ष्य 'लोक-मंगल' है।

लोक-मंगल के प्रमुख तत्व:

- **धर्म की रक्षा और अधर्म का विनाश:** शुक्ल जी के लिए लोक-मंगल का अर्थ है—सत्य की विजय और असत्य का पराभव। वे उन काव्यों को श्रेष्ठ मानते हैं जिनमें न्याय और मर्यादा की स्थापना होती है (जैसे तुलसीदास का 'रामचरितमानस')।
- **कर्म सौंदर्य:** शुक्ल जी ने केवल भावों के सौंदर्य की बात नहीं की, बल्कि 'कर्म' के सौंदर्य की भी बात की। उनके अनुसार, दुष्टों का दमन करना और पीड़ितों की रक्षा करना भी एक प्रकार का

सौंदर्य है। वे कहते हैं कि वीरता और शौर्य का चित्रण भी कविता का महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि यह समाज में उत्साह का संचार करता है।

- **लोक-हृदय की पहचान:** कविता को लोक-मंगलकारी तब माना जाता है जब वह समाज के दुःख-दर्द को अपनी वाणी दे। वह केवल महलों और विलासिता की वस्तु न होकर जनसामान्य के जीवन से जुड़ी होनी चाहिए।
- **विरोधों का सामंजस्य:** शुक्ल जी 'करुणा' और 'क्रोध' दोनों को लोक-मंगल के लिए आवश्यक मानते हैं। दुखी के प्रति 'करुणा' और अत्याचारी के प्रति 'क्रोध'—ये दोनों भाव यदि संतुलित हैं, तो समाज का कल्याण निश्चित है।

निबंध की मानवीय समीक्षा

यदि हम शुक्ल जी के विचारों को आज के संदर्भ में देखें, तो हमें समझ आता है कि वे कविता को एक 'मानवीय दवा' (Humanistic Cure) के रूप में देखते थे। आज के मशीनी युग में, जहाँ मनुष्य केवल आंकड़ों और मुनाफे की भाषा समझ रहा है, कविता ही वह तत्व है जो उसे याद दिलाती है कि उसके भीतर एक हृदय है।

शुक्ल जी की दृष्टि में कविता का महत्व:

1. **संवेदनशीलता:** कविता हमें दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाती है। यदि हम किसी का दुख देखकर दुखी नहीं होते, तो शुक्ल जी की नजर में हम 'पत्थर' हैं, मनुष्य नहीं।
2. **दृष्टि का विस्तार:** कविता हमें संकीर्ण गलियों से निकालकर खुले आसमान के नीचे ले जाती है।
3. **शक्ति का संचार:** कविता का उद्देश्य केवल रोना या भावुक होना नहीं है, बल्कि समाज में बुराई के विरुद्ध खड़े होने का साहस पैदा करना भी है।

निष्कर्ष

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, कविता मनुष्य के हृदय को व्यापक बनाने की एक सतत प्रक्रिया है। 'कविता क्या है?' निबंध में उन्होंने जो **स्वरूप** बताया वह सौंदर्यपरक है, जो **भाव-साधना** बताई वह मनोवैज्ञानिक है, और जो **लोक-मंगल** की अवधारणा दी वह पूर्णतः सामाजिक और नैतिक है।

संक्षेप में, कविता वह विधान है जो मनुष्य को उसके स्वार्थ-संबंधों के संकुचित घेरे से ऊपर उठाकर 'शेष सृष्टि' के साथ एक कर देती है। यही वह अवस्था है जहाँ पहुँचकर मनुष्य सही मायनों में 'मनुष्य' बनता है। शुक्ल जी का यह विचार आज भी साहित्यकारों और पाठकों के लिए एक प्रकाश-स्तंभ की तरह है।

अगला कदम: क्या आप चाहेंगे कि मैं इसी तरह **'साहित्यकार की आस्था' (महादेवी वर्मा)** या **'अशोक के फूल' (हजारी प्रसाद द्विवेदी)** के संदर्भ में विस्तृत चर्चा करूँ?